प्राक्कथन

साहित्य में जीवन की अभिव्यक्ति होती है या यूं कहें कि साहित्य जीवन का यथार्थ है । यही यथार्थ विभिन्न विधाओं के माध्यम से साहित्य में अभिव्यक्त होता है । समाज में घटित समस्त घटनाएँ साहित्य के मन में अमिट छाप छोड़ती हैं । साहित्यकार उन घटनाओं को बिना किसी पूर्वाग्रह या बिना पक्षपात के अपनी रचनाओं में स्थान देता है । ऐसा साहित्यकार यथार्थवादी साहित्यकार कहलाता है ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में यथार्थवाद से जो तात्पर्य हम लेते हैं, वह हिन्दी साहित्य को यूरोपीय साहित्य की देन है । हिन्दी के कवियों और लेखकों ने परिस्थितिजन्य आवश्यकताओं के अनुसार प्रभाव ग्रहण किया और साहित्य के अन्दर यथार्थवाद की अभिव्यक्ति की, जिसके कारण हिन्दी में इस प्रवृत्ति का क्रमिक विकास प्रेमचंद से मानना चाहिए, परन्तु उसके बहुत कुछ लक्षण हमें भारतेन्दु-काल से दिखलाई पड़ने लगते हैं । भारतेन्दु जी की मूल प्रेरणा राष्ट्रीय थी, परन्तु राष्ट्रीय भावना के साथ-साथ उन्होंनें जीवन के यथार्थ का भी चित्रण आरंभ किया था । आगे चलकर धीरे-धीरे यथार्थवाद का स्वरूप और भी स्पष्ट होता गया ।

देवेश ठाकुर ने हिन्दी साहित्य की इसी यथार्थवादी परम्परा को आगे बढ़ाया है । ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं । उन्होंने हिन्दी-साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर लेखनी चलाई है और सभी कृतियों में यथार्थवादी दृष्टिकोण को ही अपनाया है ।

मध्यमवर्ग के यथार्थ को प्रदर्शित करने के लिए ही मैंने अपना विषय "देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय यथार्थ" को चुना है। इस विषय के माध्यम से मैनें मध्यमवर्ग के बारे में बहुत अधिक जाना है । मैंने अपने इस कार्य को पूर्ण करने के लिए विभिन्न विषयों को भी पढ़ा है तथा पूरी लगन और मेहनत से कार्य किया है। मैंने अपने इस विषय को आठ अध्यायों में विभक्त किया है ।

प्रथम अध्याय में मैंने "मध्यमवर्गीय यथार्थ का सैद्धान्तिक स्वरूप" लिया है जिसमें मध्यमवर्ग और यथार्थ के अर्थ, परिभाषाओं और स्वरूप के बारे में बताया गया है ।

द्वितीय अध्याय में मैंने "देवेश ठाकुर की जीवनयात्रा एवं साहित्यकर्म" को लिया है जिसमें उनके व्यक्तित्व और कृत्तित्व से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी गई हैं और उनकी उपलब्धियों को भी उजागर किया गया है ।

तृतीय अध्याय में मैंने "देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय सामाजिक यथार्थ के विविध आयाम" को लिया है । इसमें मध्यमवर्ग के सामाजिक जीवन के बारे में बताया गया है कि किस प्रकार से उन्हें अपने जीवन में कठिनाईयों, परेशानियों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है और जीवन में आने वाली बाधाओं से उन्हें लड़ना पड़ता है । मध्यमवर्ग के आपसी संबंधों में वे कैसा जीवन-यापन करते हैं तथा युवावर्ग में विद्रोह और जोश की भावना को भी इसमें दिखाया गया है ।

चतुर्थ अध्याय में मैंने "देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय आर्थिक यथार्थ के विविध आयाम" को लिया है । इसमें मध्यमवर्ग की आर्थिक स्थिति को जटिल बताया गया है । निम्न मध्यमवर्ग के पास इतना पैसा नहीं होता कि वह अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके जबकि उच्च मध्यमवर्ग के पास अपना मकान और सुख-सुविधाओं के साधन होते हैं लेकिन मानसिक संतुष्टि उन्हें नहीं होती है । मध्य मध्यमवर्ग के पास पैसा और साधन बस इतने ही होते हैं कि बस काम चला रहता है । जितना कमाया उतना ही खर्च कर दिया । इसमें यह भी दिखाया गया है इस वर्ग के लोगों में लालची प्रवृत्ति भी होती है और ये निरन्तर दिखावे का जीवन व्यतीत करते हैं । बेकारी, महँगाई आदि समस्याओं से भी यह वर्ग निरन्तर जूझता रहता है ।

पञ्चम् अध्याय में मैंने "देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय राजनीतिक यथार्थ के विविध आयाम" को लिया है । इसमें मध्यमवर्ग के बारे में बताया गया है कि इस वर्ग के लोग राजनीति के प्रति सचेत रहते हैं तथा आंदोलनों में भी भाग लेते हैं। इसमें यह भी दिखाया है कि नेता किस प्रकार से जनता को लूट रहे हैं और राजनीति में भ्रष्टता निरन्तर बढ़ रही है ।

राजनीति से आम आदमी किस प्रकार से निरन्तर प्रभावित हो रहा है, ये सब बातें राजनीतिक यथार्थ के अन्तर्गत इसमें बताई गई हैं ।

षष्ठम् अध्याय में मैंने "देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय धार्मिक एवं दार्शनिक यथार्थ के विविध आयाम" को लिया है । इस अध्याय में पुरुष और नारी पर संस्कारों के प्रभाव को दिखाया गया है और इस वर्ग के लोगों का शकुन-अपशकुन, ईश्वर में आस्था-अनास्था, पाप के फल में विश्वास, भक्ति, पूजा, व्रत आदि बातों के बारे में बतलाया गया है । इन लोगों का जीवन के प्रति नजरिया भी इस उपन्यास में दिखलाया गया है ।

सप्तम् अध्याय में मैंने "देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय मनोवैज्ञानिक यथार्थ के विविध आयाम" को लिया है जिसमें मध्यमवर्ग के मनोविज्ञान के बारे में बताया गया है । इसमें सेक्स, अहं और हीनताग्रन्थि आदि के मध्यमवर्ग पर पड़ने वाले प्रभावों को दिखाया गया है ।

अष्टम अध्याय में मैंने "देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय सांस्कृतिक यथार्थ के विविध आयाम" को लिया है । इसमें मध्यमवर्ग की वार्तालाप की शैली, त्यौहार-उत्सव, नामकरण-संस्करण, विवाह-संबंधी रीतियाँ, मृत्यु संबंधी रीतियाँ, उनके विचार और व्यवहार, वेश-भूषा, खान-पान आदि बातों को बड़े ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है ।

उपसंहार में सभी अध्यायों का समाहार प्रस्तुत किया गया जिसमें मैंने विषय के अनुसार ही मध्यमवर्गीय यथार्थ के सैद्धान्तिक स्वरूप को दिखाया है तथा देवेश ठाकुर के व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी हैं । इसमें मध्यमवर्ग के यथार्थ के विविध आयामों-सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं दार्शनिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक के अन्तर्गत इस वर्ग की समस्याओं, कठिनाईयों, परेशानियों तथा कुण्ठाओं से अवगत करवाया गया है तथा इसके साथ-साथ उनके जीवन जीने के तरीके, उनकी सोच और उनकी क्षमताओं के बारे में भी बताया गया है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को इस रूप में प्रस्तुत करते हुए सर्वप्रथम मैं पूज्य शोध-निर्देशिका प्रो० पुष्पा रानी जी के समक्ष श्रद्धावनत हूँ, जिनके निर्देशन तथा मार्गदर्शन से यह प्रयास सम्पन्न हुआ । विषय-चयन से लेकर अरूप के रूपांकन तथा उनकी सहयोगी प्रवृत्ति तथा सुनिर्देशन मेरा शोध-पन्थ-प्रदीप बना रहा जिसके आलोक में मेरा यह अनुष्ठान निर्बाध सम्पन्न हुआ । उनका

मृदु-स्वभाव, स्नेहिल उत्साहवर्धन तथा अकारण अनुग्रह का आभार शब्द-परिधि से परे केवल हृदय-संवेद है । उनके अपरिमित अनुग्रह आभार से मैं आजन्म उऋण नहीं हो सकता । उन्हें धन्यवाद देकर कोरी वाग्मिता ही होगी।

उपन्यासकार एवं महान लेखक डॉ॰ देवेश ठाकुर जी मेरे लिए आदरणीय एवं सम्माननीय हैं जिनके उपन्यासों को लेकर मुझे मध्यमवर्गीय यथार्थ को जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । इन्होंने अपनी व्यस्तता में से समय निकालकर पत्राचार एवं मोबाइल फोन के माध्यम से मुझे अपने विषय से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देकर मेरा मागदर्शन किया तथा इनके द्वारा ही मुझे शोधकार्य हेतु आवश्यक सामग्री प्रदान की गई । मैं इनके प्रति कृतज्ञता से नतमस्तक हूँ ।

विभागीय गुरुजनों के प्रति भी आभार व्यक्त करना मैं अपना प्रमुख कर्त्तव्य समझता हूँ, जिनके सद्व्यवहार के कारण अपनेपन का अपेक्षित वातावरण मुझे सदैव मिला ।

अपने पूज्य माता-पिता के समक्ष कृतज्ञता नितान्त औपचारिक प्रदर्शन होगा, जिन्होंने निष्काम कर्म का उपदेश देकर सदैव मुझे इस शोध-कर्म के लिए प्रोत्साहित किया तथा मेरी जीवनसंगिनी प्रोमिला व प्रिय पुत्री निष्ठा तथा समस्त परिवारजनों का स्नेह एवं आशीर्वाद ही है, जो मेरे शोध-कार्य में आज भी मेरे साथ हैं और साथ ही मैं अपने मित्र विरेन्द्र कुमार, पवन कुमार, डॉ॰ तेलू राम व अन्य मित्र मण्डली का भी आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मेरा साथ निभाया और सहयोग दिया ।

इसके अतिरिक्त जिन मनीषियों के ग्रन्थों से मुझे इस शोध कार्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सहायता मिली, उन सबके प्रति भी मैं कृतज्ञ एवं ताउम्र आभारी रहूँगा ।

यह 'देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय यथार्थ' का प्रथम बाल प्रयास है और प्रयास में पूर्णत्व का झूठा दंभ मैं कदापि नहीं कर सकता ।

अन्त में मैं अपनी सीमित क्षमताओं को भली-भांति समझते हुए यह शोध कृति विद्वान् परीक्षकों के समक्ष मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करता हूँ ।

दिनांक : **(नरेन्द्र कुमार)**